



???? ???????????

11 Dec 2002

02:55 PM

Kishanganj

शुद्धभाषण

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

লিঙ্গ _____: পুরুষ
জন্ম তারিখ _____: 11/12/2002
দিন _____: বুধবার
জন্ম সময় _____: 14:55:00 ঘণ্টা
ইন্ট _____: 21:39:14 ঘণ্টা
স্থান _____: Kishanganj
রাজ্য _____: Bihar
দেশ _____: India

অক্ষাংশ _____: 26:06:00 উত্তর
রেখাংশ _____: 87:57:00 পূর্ব
মধ্য রেখাংশ _____: 82:30:00 পূর্ব
স্থানীয় সংস্কার _____: 00:21:48 ঘণ্টা
গ্রীষ্ম সংস্কার _____: 00:00:00 ঘণ্টা
স্থানীয় সময় শোধন _____: 15:16:48 ঘণ্টা
বেলাান্তর _____: 00:06:54 ঘণ্টা
সাম্পাতিক কাল _____: 20:36:30 ঘণ্টা
সূর্যোদয় _____: 06:15:18 ঘণ্টা
সূর্যাস্ত _____: 16:47:26 ঘণ্টা
দিনমান _____: 10:32:08 ঘণ্টা
সূর্য স্থিতি -অয়ন _____: দক্ষিণায়ন
সূর্য স্থিতি -গোল _____: দক্ষিণ
ঋতু _____: হেমন্ত
সূর্য ডিগ্রী _____: 25:15:47 বৃশ্চিক
লগ্ন ডিগ্রী _____: 26:46:49 মেঘ

অবকহড়া চক্র
লগ্ন-লগ্নাধিপতি _____: মেঘ - মঙ্গল
রাশি-স্বামী _____: কুম্ভ - শনি
নক্ষত্র-চরণ _____: পূ ভাদ্রপদ - 1
নক্ষত্র-স্বামী _____: বৃহস্পতি
যোগ _____: বজ্র
করণ _____: বিষ্টি
গণ _____: নর
যোনি _____: সিংহ
নাড়ী _____: আদ্য
বর্গ _____: শুদ্ধ
বশ্য _____: মানব
বর্গ _____: মেঘ
যুগ্ম _____: অন্ত
হংসক _____: ভূমি
জন্ম নামাক্ষর _____: সে-সেনজিত
পায়া/রাশি-নক্ষত্র _____: স্ববর্গ - লৌহ
সূর্য রাশি-পাশ্চাত্য _____: ধনু

পঞ্জিকা

পিতামহের নাম _____ :
বাবার নাম _____ :
মায়ের নাম _____ :
জাতি _____ :
গোত্র _____ :

| ক্যালেন্ডার | বর্ষ | মাস | তিথি/প্রবিন্দ |
|--------------|---------------|-------------|---------------|
| রাষ্ট্রীয় | শক : 1924 | মাগশীর্ষ | 20 |
| পাঞ্জাবী | সম্বৎ : 2059 | মাগশীর্ষ | 26 |
| বাংলা | সন্ : 1409 | মাগশীর্ষ | 25 |
| তামিল | সম্বৎ : 2059 | কার্ত্তিগাঈ | 26 |
| কেরালা | কোল্লম : 1178 | বৃশ্চিকম্ | 25 |
| নেপালী | সম্বৎ : 2059 | মাগশীর্ষ | 26 |
| চৈত্রাদি | সম্বৎ : 2059 | মাগশীর্ষ | শুক্ল 7 |
| কার্ত্তিকাদি | সম্বৎ : 2059 | মাগশীর্ষ | শুক্ল 7 |

পঞ্জিকা

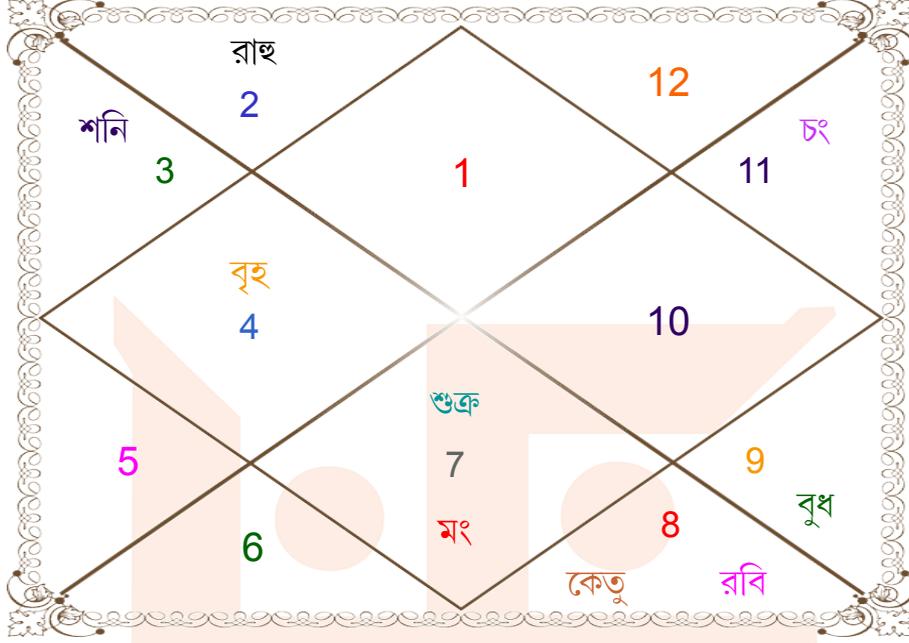
সূর্যোদয় কালীন তিথি _____ : 7
তিথির সমাপ্তিকালীন _____ : 08:20:44
জন্ম তিথি _____ : 8
সূর্যোদয় কালীন নক্ষত্র _____ : শতভিষা
নক্ষত্র সমাপ্ত কাল _____ : 10:20:48 ঘন্টা
জন্মকালীন যোগ _____ : পূ ভাদ্রপদ
সূর্যোদয় কালীন যোগ _____ : বজ্র
যোগ সমাপ্ত কাল _____ : 19:21:08 ঘন্টা
জন্মকালীন যোগ _____ : বজ্র
সূর্যোদয় কালীন করণ _____ : বণিজ
করণ সমাপ্ত কাল _____ : 08:20:44 ঘন্টা
জন্মকালীন করণ _____ : বিষ্টি
ভয়ৎ _____ : 11:25:28
ভাবক _____ : 66:22:15
ভোগ্য দশা _____ : বৃহ 13 ব 2 মা 21 দি

ঘাত চক্র

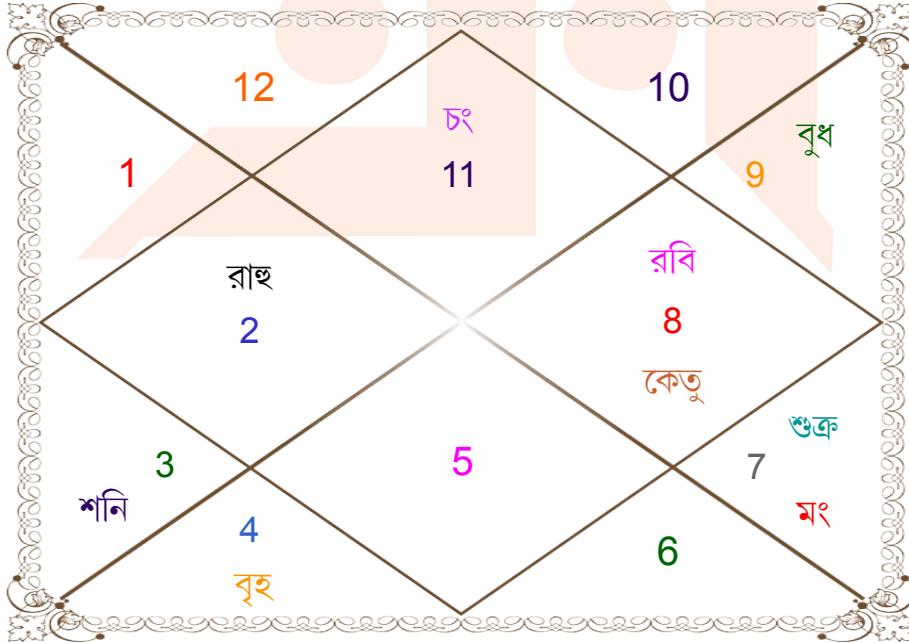
মাস _____ : চৈত্র
তিথি _____ : 3-8-13
দিন _____ : বৃহস্পতিবার
নক্ষত্র _____ : আর্দ্রা
যোগ _____ : গন্ড
করণ _____ : কিস্তুয়
প্রহর _____ : 3
বর্গ _____ : হংস
লগ্ন _____ : মিথুন
সূর্য _____ : বৃষ
চন্দ্র _____ : ধনু
মঙ্গল _____ : মিথুন
বুধ _____ : বৃষ
বৃহস্পতি _____ : ককট
শুক্ল _____ : সিংহ
শনি _____ : মেঘ
রাহু _____ : কন্যা

জন্ম কুণ্ডলী

নগ্ন কুণ্ডলী



চন্দ্র কুণ্ডলী



লগ্ন কুন্ডলী ঔর দশা

লগ্ন কুন্ডলী

| | | | |
|-----|-------------|-------------|-----|
| | লং | রাহ | শনি |
| চং | | | বৃহ |
| | | | |
| বুধ | কেতু রবি | শুক্র মং | |

লগ্ন কুন্ডলী

| | | |
|-----|-------------|--------------------|
| রাহ | লং | |
| শনি | | চং |
| | বৃহ | |
| | মং শুক্র | বুধ রবি কেতু |

বিংশোত্তরী
বৃহস্পতি 13ব 2মা 21দি
বৃহস্পতি
11/12/2002
04/03/2120

| | |
|----------|------------|
| বৃহস্পতি | 03/03/2016 |
| শনি | 03/03/2035 |
| বুধ | 03/03/2052 |
| কেতু | 03/03/2059 |
| শুক্র | 03/03/2079 |
| রবি | 03/03/2085 |
| চন্দ্র | 03/03/2095 |
| মঙ্গল | 04/03/2102 |
| রাহ | 04/03/2120 |

য়োগিনী
ভ্রামরী 3ব 3মা 20দি
সঙ্কট
01/04/2024
01/04/2032

| | |
|---------|------------|
| সঙ্কট | 11/01/2026 |
| মঙ্গলা | 02/04/2026 |
| পিঙ্গলা | 11/09/2026 |
| ধান্যা | 13/05/2027 |
| ভ্রামরী | 01/04/2028 |
| ভদ্রিকা | 12/05/2029 |
| উলকা | 11/09/2030 |
| সিদ্ধা | 01/04/2032 |

গ্রহের ডিগ্রী এবং তার অবস্থান

| গ্রহ | ব | অ | রাশি | ডিগ্রী | গতি | নক্ষত্র | পদ | সংখ্যা | রা | ন | অ. | স্থিতি |
|---------|---|---|--------|----------|-----------|------------|----|--------|-------|------|------|------------|
| লং | | | মেঘ | 26:46:49 | 415:13:58 | কৃত্তিকা | 1 | 3 | মং | রবি | রবি | --- |
| রবি | | | বৃশ্চি | 25:15:47 | 01:00:59 | জ্যেষ্ঠা | 3 | 18 | মং | বুধ | রাহু | মিত্ররাশি |
| চং | | | কুম্ভ | 22:18:44 | 12:07:23 | পূ ভাদ্রপদ | 1 | 25 | শনি | বৃহ | শনি | সমরাশি |
| মং | | | তুলা | 12:24:07 | 00:38:36 | স্বাতী | 2 | 15 | শুক্র | রাহু | শনি | সমরাশি |
| বুধ | | | ধনু | 09:58:24 | 01:30:44 | মূলা | 3 | 19 | বৃহ | কেতু | শনি | সমরাশি |
| বৃহ | ব | | কর্ক | 24:07:57 | 00:01:22 | অশ্লেষা | 3 | 9 | চং | বুধ | রাহু | উচচস্থ |
| শুক্র | | | তুলা | 13:11:25 | 00:37:52 | স্বাতী | 2 | 15 | শুক্র | রাহু | বুধ | মূলত্রিকোণ |
| শনি | ব | | মিথু | 02:13:33 | 00:04:54 | মৃগশিরা | 3 | 5 | বুধ | মং | কেতু | মিত্ররাশি |
| রাহু | ব | | বৃষ | 14:43:26 | 00:00:17 | রোহিণী | 2 | 4 | শুক্র | চং | বৃহ | মিত্ররাশি |
| কেতু | ব | | বৃশ্চি | 14:43:26 | 00:00:17 | অনুরাধা | 4 | 17 | মং | শনি | রাহু | মিত্ররাশি |
| ইউ | | | কুম্ভ | 01:35:41 | 00:01:50 | ধনিষ্ঠা | 3 | 23 | শনি | মং | বুধ | --- |
| নেপ | | | মক | 15:02:10 | 00:01:37 | শ্রবণা | 2 | 22 | শনি | চং | বৃহ | --- |
| প্লু | | | বৃশ্চি | 23:36:49 | 00:02:18 | জ্যেষ্ঠা | 3 | 18 | মং | বুধ | মং | --- |
| দশম ভাব | | | মক | 12:50:04 | -- | শ্রবণা | -- | 22 | শনি | চং | রাহু | -- |

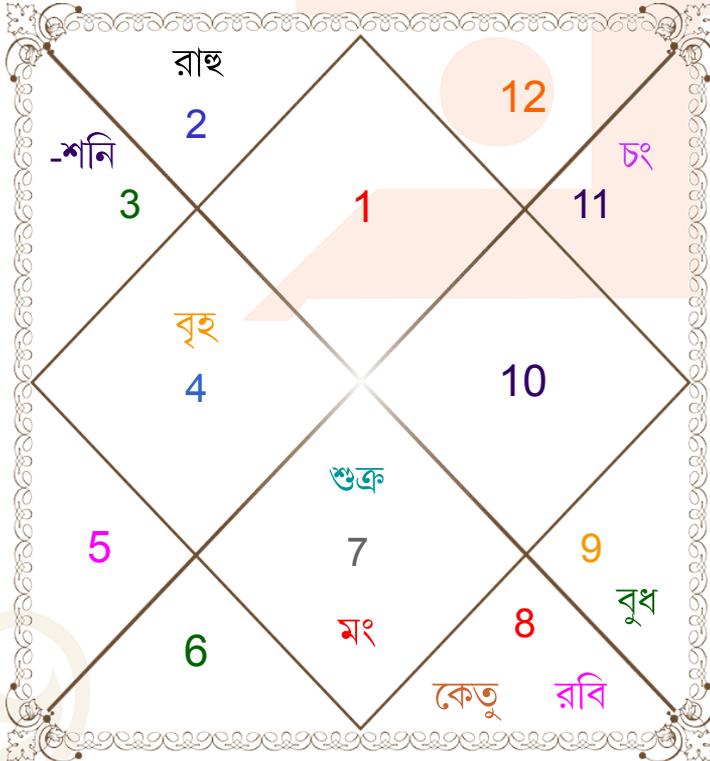
ব - বক্রী স - স্থির

অ - অস্ত পূ - পূর্ণ অস্ত

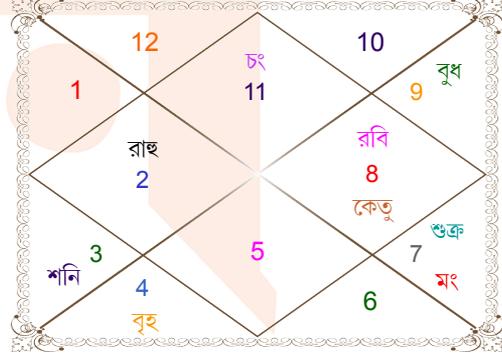
রাহু : স্পর্শ

লাহিড়ী অয়নাংশ : 23:53:37

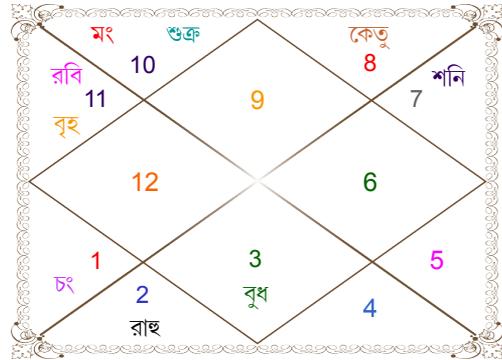
লগ্ন চলিত



চন্দ্র কুন্ডলী



নবাংশ কুন্ডলী



চলিত এবং নিরয়ন ভাব চলিত

চলিত ডিগ্রী

| ভাব | ভাব সন্ধি | ভাব মধ্য |
|-----|------------------|------------------|
| 1 | মেঘ 09:27:21 | মেঘ 26:46:49 |
| 2 | বৃষ 09:27:21 | বৃষ 22:07:54 |
| 3 | মিথুন 04:48:27 | মিথুন 17:28:59 |
| 4 | কর্কট 00:09:32 | কর্কট 12:50:04 |
| 5 | সিংহ 00:09:32 | সিংহ 17:28:59 |
| 6 | কন্যা 04:48:27 | কন্যা 22:07:54 |
| 7 | তুলা 09:27:21 | তুলা 26:46:49 |
| 8 | বৃশ্চিক 09:27:21 | বৃশ্চিক 22:07:54 |
| 9 | ধনু 04:48:27 | ধনু 17:28:59 |
| 10 | মকর 00:09:32 | মকর 12:50:04 |
| 11 | কুম্ভ 00:09:32 | কুম্ভ 17:28:59 |
| 12 | মীন 04:48:27 | মীন 22:07:54 |

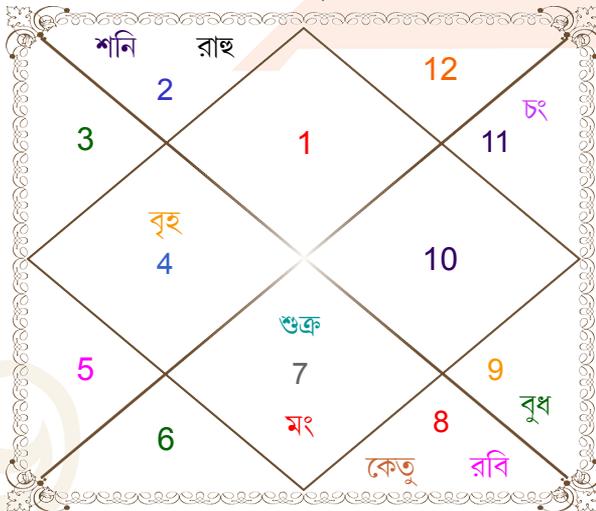
নিরয়ন ভাব চলিত

| ভাব | রাশি | ডিগ্রী |
|-----|---------|----------|
| 1 | মেঘ | 26:46:49 |
| 2 | বৃষ | 24:13:35 |
| 3 | মিথুন | 18:09:32 |
| 4 | কর্কট | 12:50:04 |
| 5 | সিংহ | 11:52:59 |
| 6 | কন্যা | 17:39:10 |
| 7 | তুলা | 26:46:49 |
| 8 | বৃশ্চিক | 24:13:35 |
| 9 | ধনু | 18:09:32 |
| 10 | মকর | 12:50:04 |
| 11 | কুম্ভ | 11:52:59 |
| 12 | মীন | 17:39:10 |

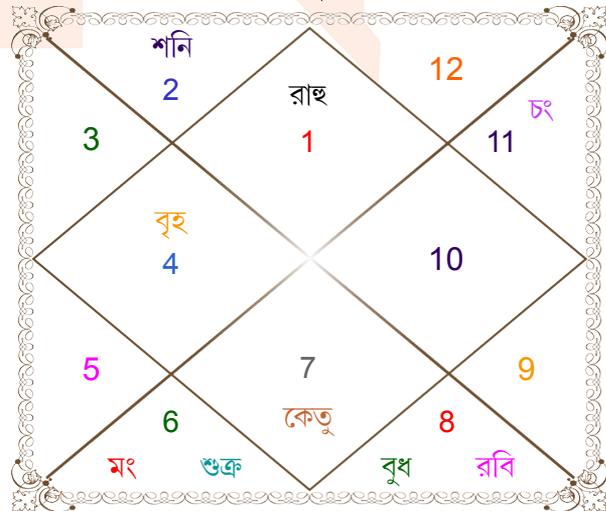
তারা চক্র

| জন্ম | সম্পত | বিপত | ক্ষেম | প্রত্যারি | সাধক | বধ | মিত্র | অতিমিত্র |
|------------|-----------|----------|---------|-------------|-------------|--------|---------|----------|
| পূ ভাদ্রপদ | উ ভাদ্রপদ | রেবতী | অশ্বিনী | ভরণী | কৃত্তিকা | রোহিণী | মৃগশিরা | আর্দ্রা |
| পুনর্বসু | পুষ্যা | অশ্লেষা | মঘা | পূ ফালগুনী | উ ফালগুনী | হস্তা | চিত্রা | স্বাতী |
| বিশাখা | অনুরাধা | জ্যেষ্ঠা | মূলা | পূর্বাষাঢ়া | উত্তরাষাঢ়া | শ্রবণা | ধনিষ্ঠা | শতভিষা |

চলিত কুম্ভলী



ভাব কুম্ভলী



বিংশোত্তরী দশা

ভোগ্য দশা : বৃহস্পতি 13 বর্ষ 2 মাস 21 দিন

| বৃহ 16 বর্ষ | শনি 19 বর্ষ | বুধ 17 বর্ষ | কেতু 7 বর্ষ | শুক্র 20 বর্ষ |
|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|
| 11/12/2002 03/03/2016 | 03/03/2016 03/03/2035 | 03/03/2035 03/03/2052 | 03/03/2052 03/03/2059 | 03/03/2059 03/03/2079 |
| 11/12/2002 | শনি 06/03/2019 | বুধ 30/07/2037 | কেতু 30/07/2052 | শুক্র 03/07/2062 |
| শনি 01/11/2004 | বুধ 14/11/2021 | কেতু 27/07/2038 | শুক্র 29/09/2053 | রবি 03/07/2063 |
| বুধ 07/02/2007 | কেতু 23/12/2022 | শুক্র 27/05/2041 | রবি 04/02/2054 | চং 03/03/2065 |
| কেতু 14/01/2008 | শুক্র 22/02/2026 | রবি 03/04/2042 | চং 05/09/2054 | মং 03/05/2066 |
| শুক্র 14/09/2010 | রবি 04/02/2027 | চং 02/09/2043 | মং 01/02/2055 | রাহু 03/05/2069 |
| রবি 03/07/2011 | চং 04/09/2028 | মং 29/08/2044 | রাহু 19/02/2056 | বৃহ 02/01/2072 |
| চং 01/11/2012 | মং 14/10/2029 | রাহু 19/03/2047 | বৃহ 25/01/2057 | শনি 03/03/2075 |
| মং 08/10/2013 | রাহু 20/08/2032 | বৃহ 24/06/2049 | শনি 06/03/2058 | বুধ 01/01/2078 |
| রাহু 03/03/2016 | বৃহ 03/03/2035 | শনি 03/03/2052 | বুধ 03/03/2059 | কেতু 03/03/2079 |

| রবি 6 বর্ষ | চং 10 বর্ষ | মং 7 বর্ষ | রাহু 18 বর্ষ | বৃহ 16 বর্ষ |
|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|
| 03/03/2079 03/03/2085 | 03/03/2085 03/03/2095 | 03/03/2095 04/03/2102 | 04/03/2102 04/03/2120 | 04/03/2120 00/00/0000 |
| রবি 21/06/2079 | চং 01/01/2086 | মং 31/07/2095 | রাহু 14/11/2104 | বৃহ 22/04/2122 |
| চং 21/12/2079 | মং 02/08/2086 | রাহু 17/08/2096 | বৃহ 10/04/2107 | শনি 12/12/2122 |
| মং 26/04/2080 | রাহু 01/02/2088 | বৃহ 24/07/2097 | শনি 14/02/2110 | 00/00/0000 |
| রাহু 21/03/2081 | বৃহ 02/06/2089 | শনি 02/09/2098 | বুধ 02/09/2112 | 00/00/0000 |
| বৃহ 07/01/2082 | শনি 02/01/2091 | বুধ 30/08/2099 | কেতু 21/09/2113 | 00/00/0000 |
| শনি 20/12/2082 | বুধ 02/06/2092 | কেতু 26/01/2100 | শুক্র 21/09/2116 | 00/00/0000 |
| বুধ 27/10/2083 | কেতু 01/01/2093 | শুক্র 28/03/2101 | রবি 15/08/2117 | 00/00/0000 |
| কেতু 03/03/2084 | শুক্র 02/09/2094 | রবি 03/08/2101 | চং 14/02/2119 | 00/00/0000 |
| শুক্র 03/03/2085 | রবি 03/03/2095 | চং 04/03/2102 | মং 04/03/2120 | 00/00/0000 |

❖ উপরোক্ত দশা চন্দ্রের অংশ আধারিত । ভয়াত ভোগ্য আধারিত দশা ভোগ্যকাল বৃহ ১৩ ব ২ মা ২৯ দি হয় ।

❖ উপরোক্ত তিথি দশা সমাপ্তির সময় । বিংশোত্তরী দশা পুরো ১২০ বর্ষের বর্গিত, আয়ুনির্ণয় ব্যতীত ।

বিংশোত্তরী দশা - প্রত্যন্তর

| শনি - শুক্র | | শনি - রবি | | শনি - চং | | শনি - মং | | শনি - রাহু | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 23/12/2022 | | 22/02/2026 | | 04/02/2027 | | 04/09/2028 | | 14/10/2029 | |
| 22/02/2026 | | 04/02/2027 | | 04/09/2028 | | 14/10/2029 | | 20/08/2032 | |
| শুক্র | 04/07/2023 | রবি | 11/03/2026 | চং | 24/03/2027 | মং | 28/09/2028 | রাহু | 19/03/2030 |
| রবি | 31/08/2023 | চং | 09/04/2026 | মং | 27/04/2027 | রাহু | 28/11/2028 | বৃহ | 05/08/2030 |
| চং | 05/12/2023 | মং | 30/04/2026 | রাহু | 23/07/2027 | বৃহ | 21/01/2029 | শনি | 17/01/2031 |
| মং | 11/02/2024 | রাহু | 21/06/2026 | বৃহ | 08/10/2027 | শনি | 26/03/2029 | বুধ | 13/06/2031 |
| রাহু | 02/08/2024 | বৃহ | 06/08/2026 | শনি | 07/01/2028 | বুধ | 22/05/2029 | কেতু | 13/08/2031 |
| বৃহ | 04/01/2025 | শনি | 30/09/2026 | বুধ | 29/03/2028 | কেতু | 15/06/2029 | শুক্র | 03/02/2032 |
| শনি | 06/07/2025 | বুধ | 18/11/2026 | কেতু | 02/05/2028 | শুক্র | 21/08/2029 | রবি | 26/03/2032 |
| বুধ | 17/12/2025 | কেতু | 08/12/2026 | শুক্র | 06/08/2028 | রবি | 10/09/2029 | চং | 20/06/2032 |
| কেতু | 22/02/2026 | শুক্র | 04/02/2027 | রবি | 04/09/2028 | চং | 14/10/2029 | মং | 20/08/2032 |
| শনি - বৃহ | | বুধ - বুধ | | বুধ - কেতু | | বুধ - শুক্র | | বুধ - রবি | |
| 20/08/2032 | | 03/03/2035 | | 30/07/2037 | | 27/07/2038 | | 27/05/2041 | |
| 03/03/2035 | | 30/07/2037 | | 27/07/2038 | | 27/05/2041 | | 03/04/2042 | |
| বৃহ | 21/12/2032 | বুধ | 06/07/2035 | কেতু | 20/08/2037 | শুক্র | 16/01/2039 | রবি | 12/06/2041 |
| শনি | 17/05/2033 | কেতু | 26/08/2035 | শুক্র | 20/10/2037 | রবি | 08/03/2039 | চং | 08/07/2041 |
| বুধ | 25/09/2033 | শুক্র | 20/01/2036 | রবি | 07/11/2037 | চং | 03/06/2039 | মং | 26/07/2041 |
| কেতু | 18/11/2033 | রবি | 04/03/2036 | চং | 07/12/2037 | মং | 02/08/2039 | রাহু | 10/09/2041 |
| শুক্র | 21/04/2034 | চং | 16/05/2036 | মং | 28/12/2037 | রাহু | 04/01/2040 | বৃহ | 22/10/2041 |
| রবি | 07/06/2034 | মং | 07/07/2036 | রাহু | 20/02/2038 | বৃহ | 21/05/2040 | শনি | 10/12/2041 |
| চং | 23/08/2034 | রাহু | 15/11/2036 | বৃহ | 10/04/2038 | শনি | 01/11/2040 | বুধ | 23/01/2042 |
| মং | 16/10/2034 | বৃহ | 13/03/2037 | শনি | 06/06/2038 | বুধ | 28/03/2041 | কেতু | 10/02/2042 |
| রাহু | 03/03/2035 | শনি | 30/07/2037 | বুধ | 27/07/2038 | কেতু | 27/05/2041 | শুক্র | 03/04/2042 |
| বুধ - চং | | বুধ - মং | | বুধ - রাহু | | বুধ - বৃহ | | বুধ - শনি | |
| 03/04/2042 | | 02/09/2043 | | 29/08/2044 | | 19/03/2047 | | 24/06/2049 | |
| 02/09/2043 | | 29/08/2044 | | 19/03/2047 | | 24/06/2049 | | 03/03/2052 | |
| চং | 16/05/2042 | মং | 23/09/2043 | রাহু | 16/01/2045 | বৃহ | 07/07/2047 | শনি | 26/11/2049 |
| মং | 15/06/2042 | রাহু | 16/11/2043 | বৃহ | 20/05/2045 | শনি | 15/11/2047 | বুধ | 14/04/2050 |
| রাহু | 31/08/2042 | বৃহ | 04/01/2044 | শনি | 15/10/2045 | বুধ | 11/03/2048 | কেতু | 11/06/2050 |
| বৃহ | 08/11/2042 | শনি | 01/03/2044 | বুধ | 24/02/2046 | কেতু | 29/04/2048 | শুক্র | 22/11/2050 |
| শনি | 29/01/2043 | বুধ | 21/04/2044 | কেতু | 19/04/2046 | শুক্র | 14/09/2048 | রবি | 10/01/2051 |
| বুধ | 13/04/2043 | কেতু | 13/05/2044 | শুক্র | 21/09/2046 | রবি | 25/10/2048 | চং | 02/04/2051 |
| কেতু | 13/05/2043 | শুক্র | 12/07/2044 | রবি | 07/11/2046 | চং | 02/01/2049 | মং | 29/05/2051 |
| শুক্র | 07/08/2043 | রবি | 30/07/2044 | চং | 23/01/2047 | মং | 19/02/2049 | রাহু | 24/10/2051 |
| রবি | 02/09/2043 | চং | 29/08/2044 | মং | 19/03/2047 | রাহু | 24/06/2049 | বৃহ | 03/03/2052 |

শুভাশুভ জ্ঞান

শুভাশুভজ্ঞান আপনাকে নিজের মিত্র এবং শত্রু সম্বন্ধে সজাগ করায়। মূলাক্ষ, ভাগ্যাক্ষ এবং মিত্রাঙ্কর সহিত মিত্রতা এবং অংশীদারি করলে লাভ তথা সহযোগ প্রাপ্তি হবে। শুভ দিন এবং বর্ষ উন্নতি কারক তথা শুভ গ্রহের দশা লাভদায়ক। সেরূপ মিত্রলগ্ন এবং মিত্ররাশির ঘনিষ্ঠতা লাভদায়ক।

শুভরত্ন, শুভ ধাতু এবং শুভ রং ধারণ করলে শারীরিক এবং মানসিক সুস্থতা থাকে, ভাগ্য রত্ন ধারণ করলে সৌভাগ্য বৃদ্ধি হয়। শুভ সময়ে কার্য প্রারম্ভ করলে সফলতা প্রাপ্তি হয়। সাথে-সাথে ইন্টদেবের ধ্যান এবং জপ মানসিক শান্তি তথা সফলতা প্রদান করে। শুভ পদার্থ-অন্ন, দ্রব্য ইত্যাদির দান অথবা ব্যবসায় শুভ দিকে শুরু করলে বাঞ্ছিত ফললাভ প্রাপ্ত হয়। এইরূপ শুভাশুভজ্ঞানের দৈনন্দিন জীবনে প্রয়োগ শুভফলদায়ক।

| | |
|--------------|---------------------------|
| মূলাক্ষ | 2 |
| ভাগ্যাক্ষ | 9 |
| মিত্র অক্ষ | 2, 7, 8, 9 |
| শত্রু অক্ষ | 4, 5, 6 |
| শুভ বর্ষ | 20,29,38,47,56 |
| শুভ দিন | বৃহ, রবি, মঙ্গ |
| শুভ গ্রহ | বৃহস্পতি, রবি, মঙ্গল |
| মিত্র রাশি | বৃষ, তুলা |
| মিত্র লগ্ন | কর্কট, ধনু, কুম্ভ |
| অনুকূল দেবতা | কুবের |
| শুভ রত্ন | প্রবাল |
| শুভ উপরত্ন | লাল হকীক |
| ভাগ্য রত্ন | পোখরাজ |
| শুভ ধাতু | তাম্র |
| শুভ রং | রক্ত |
| শুভ দিক্ | দক্ষিণ |
| শুভ সময় | সূর্যোদয় পশ্চাত |
| দান পদার্থ | কেশর, কস্তুরী, রক্ত চন্দন |
| দান অন্ন | মলকা |
| দান দ্রব্য | ঘী |

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को परिणामात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की फति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शाया गया है। साथ ही केटोन सा ग्रह किस त्रे में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को १५ प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसे रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिसे ५०-१५ प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसे कार्य त्रे अन्सार व अन्कल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल २५-५० प्रतिशत शुभता लिए हैं उनसे रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिसे २५ प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समर्थन नर उनसे रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|------------|-------|-------|---|
| पोखराज | बृह | 81% | सुख, भाग्योदय, कम खर्च |
| मुञ्जा | चं | 69% | धनार्जन, सुख |
| नीला | शनि | 61% | परिक्रम, वावसायिक उन्नति, धनार्जन |
| गोमेद | राह | 61% | धन, दम्पति |
| प्रवाल | मं | 59% | दम्पति, स्वास्थ्य, दुर्घटना एडानो |
| माणिक्य | रवि | 56% | दुर्घटना एडानो, सन्तति सुख |
| पान्ना | बुध | 52% | भाग्योदय, परिक्रम, शत्रु एवं रोग मुक्ति |
| हीरा | शुक्र | 47% | दाम्पत्य कष्ट, धन हानि |
| वैदूर्यमनि | केतु | 19% | दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट |



दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मुञ्जा | प्रवाल | पान्ना | पोखराज | हीरा | नीला | गोमेद | वैदूर्यमनि |
|-------|------------|---------|--------|--------|--------|--------|------|------|-------|------------|
| बृह | 03/03/2016 | 62% | 75% | 66% | 28% | 94% | 22% | 61% | 61% | 19% |
| शनि | 03/03/2035 | 38% | 56% | 44% | 58% | 81% | 55% | 73% | 67% | 0% |
| बुध | 03/03/2052 | 62% | 56% | 59% | 64% | 81% | 55% | 61% | 61% | 19% |
| केतु | 03/03/2059 | 38% | 56% | 66% | 52% | 81% | 55% | 47% | 47% | 44% |
| शुक्र | 03/03/2079 | 38% | 56% | 59% | 58% | 81% | 61% | 67% | 67% | 31% |
| रवि | 03/03/2085 | 69% | 75% | 66% | 52% | 88% | 22% | 47% | 47% | 0% |
| चं | 03/03/2095 | 62% | 81% | 59% | 58% | 81% | 47% | 61% | 47% | 0% |
| मं | 04/03/2102 | 62% | 75% | 72% | 28% | 88% | 47% | 61% | 47% | 31% |
| राह | 04/03/2120 | 38% | 56% | 44% | 52% | 81% | 55% | 67% | 73% | 0% |

সাড়েসাতী বিচার

শনির সাড়েসাতীর প্রভাব দান পূজা অনাহার এবং মন্ত্র উচ্চারণের সাহায্যে কমানো সম্ভব। রত্ন পরিধান করার পূর্বে দুধ ও গঙ্গাজলে পরিষ্কার করে ধূপ জালিয়ে পূজা এবং ১০৮ বার মন্ত্র উচ্চারণ করতে হবে। শনি দ্বাদশ, প্রথম এবং দ্বিতীয় স্থান অতিক্রম করলে তবেই কোন জন্মকুণ্ডলীতে সাড়েসাতীর প্রভাব পরিলক্ষিত হয়। শনি নাটাল চন্দ্রের চতুর্থ ও অষ্টম স্থান অতিক্রম করার ফলে ঠেয়ার প্রভাব দেখা যায়। সাড়েসাতীর প্রভাব বিদ্যমান হয় সাড়ে সাত বছর এবং ঠেয়ার প্রভাব বিদ্যমান হয় আড়াই বছর। সাধারণতঃ এটি শরীর, মানসিক শাস্তি এবং অর্থনৈতিক অবস্থা বিঘ্নিত করে।

সাধারণতঃ সাড়েসাতী যে কোনো জন্মকুণ্ডলী তিনবার পরিভ্রমণ করে প্রথম-বাল্যকালে দ্বিতীয়-যৌবনকালে তৃতীয় - বৃদ্ধ বয়সে, প্রথম সাড়েসাতী শিক্ষা ও পিতা মাতাকে প্রভাবিত করে। দ্বিতীয় সাড়েসাতী জীবিকা অর্থ এবং পারিবারকে প্রভাবিত করে। শেষ সাড়েসাতী স্বাস্থ্যকে প্রভাবিত করে।

নিম্ন লিখিত সারণীতে সাড়েসাতীর পর্যায় এবং তার প্রভাব বর্ণিত হল।

প্রথম চক্র

| | | | |
|--------------------------|-----------------------|-----------------------|-------|
| অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া | 10/09/2009-15/11/2011 | 16/05/2012-04/08/2012 | ----- |
| সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া | 24/01/2020-29/04/2022 | 12/07/2022-17/01/2023 | ----- |
| সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া | 29/04/2022-12/07/2022 | 17/01/2023-29/03/2025 | ----- |
| সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া | 29/03/2025-03/06/2027 | 20/10/2027-23/02/2028 | ----- |
| চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া | 08/08/2029-05/10/2029 | 17/04/2030-31/05/2032 | ----- |

দ্বিতীয় চক্র

| | | | |
|--------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া | 22/10/2038-05/04/2039 | 13/07/2039-28/01/2041 | 06/02/2041-26/09/2041 |
| সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া | 06/03/2049-10/07/2049 | 04/12/2049-25/02/2052 | ----- |
| সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া | 25/02/2052-14/05/2054 | 02/09/2054-05/02/2055 | ----- |
| সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া | 14/05/2054-02/09/2054 | 05/02/2055-07/04/2057 | ----- |
| চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া | 27/05/2059-11/07/2061 | 13/02/2062-07/03/2062 | ----- |

তৃতীয় চক্র

| | | | |
|--------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া | 30/08/2068-04/11/2070 | ----- | ----- |
| সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া | 15/01/2079-12/04/2081 | 03/08/2081-07/01/2082 | ----- |
| সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া | 12/04/2081-03/08/2081 | 07/01/2082-20/03/2084 | ----- |
| সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া | 20/03/2084-21/05/2086 | 21/05/2086-08/02/2087 | ----- |
| চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া | 18/07/2088-31/10/2088 | 05/04/2089-19/09/2090 | 25/10/2090-21/05/2091 |

শনির ঠেয়া ফল

| ঠেয়ার প্রকার | ফল | ক্ষেত্র |
|--------------------------|------|-------------------|
| অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া | শুভ | শত্রু এবং রোগ |
| সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া | শুভ | ব্যবসায়িক উন্নতি |
| সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া | শুভ | ধনার্জন |
| সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া | অশুভ | কম খরচ |
| চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া | শুভ | ধন |

সাড়েসাতীর উপায়

দান পূজা অনাহার এবং মন্ত্র উচ্চারণের মাধ্যমে সাড়েসাতীর প্রভাব সীমিত করা সম্ভব। দান সামগ্রীর মধ্যে কালো বস্ত্র কালো কলাই, চামড়ার জুতো, শস্য দানা ইত্যাদি উল্লেখ যোগ্য। শনিবার অনাহার করে শনির পূজা করা উচিত এবং পরে গম, গমের আটা, ফল, কালো নুন, কালো কলাই ইত্যাদি আহার করা উচিত। শনিবার নিজে অথবা ব্রাহ্মণের মাধ্যমে ১৯০০০ বার।

ॐ প্রাং প্রং প্রৌং সঃ শনৈশ্চরায় নমঃ ।।

মন্ত্র, উচ্চারণ করা দরকার স্বাস্থ্য মানসিক শান্তি, পরিবারের সুখ, অর্থ এবং জীবিকার উপর সাড়েসাতীর শুভপ্রভাব লাভের জন্য মহামৃত্যুঞ্জয় মন্ত্র উচ্চারণ করলে সুফল পাওয়া যেতে পারে। ১২৫০০০ বার এই মন্ত্রটি উচ্চারণ করতে হবে।

ॐ ত্রযংবকম যজামহে সুগন্ধিং পুষ্টিবর্ধনম্।

উবার্গকমিব বন্ধনাম্মৃত্যোর্মুক্ষীয় মা মৃতাত।।

রত্ন পরিধানের পূর্বে এটি দুধ এবং গঙ্গাজলে ধুয়ে ধূপ জালিয়ে পূজা এবং ১০৮ বার মন্ত্র উচ্চারণ করতে হবে।

ॐ হোং জুং স ॐ ভূর্ভুব স্ব ॐ।।

শনির সাড়েসাতীর শুভত্ব যাড়ানোর জন্য শনি যারের দিন আপনি ঘোড়ার নাল বা নৌকার পেরেক দিয়ে তৈরী লোহার আংটা ধারণ করুন। আপনি নীলা বস্ত্র যাহিষ্কার করুন, কারণ শনি আপনার ঠিকুজীতে যোগকারক গ্রহ নয়। লোহার আংটা ডানহাতে মধ্যমা আঙুলে ধারণ করুন।

শনিবার শুক্ল পক্ষে সূর্যোৎস-র পূর্বে রত্ন পরিধানের শুভ সময়। এদিন পুষ-্যা, অনুরাধা, উত্তরা ভাদ্রপদ নক্ষত্র গুলি শুভ। শনিবার উপোস থাকা জরুরি।

ॐ শং শনৈশ্চরায় নম ।

অঙ্গুষ্ঠী ধারণ করলে শনির বস্ত্র দান করা উচিত। শনির অশুভ প্রভাব কম হবে তথা আপনার সুখ শান্তি এবং সমৃদ্ধি বৃদ্ধি হবে। ডড্রডশডড্রডশশ্রী হনুমান চালীসা এবং শ্রী হনুমান অষ্টক পাঠ করা শ্রেষ্ঠ।

ईर्ष्या “कृष्ण”

जब वर या कन्या की कुंडली में मङ्गल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो माङ्गलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तृविनाशश्च भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।**

यदि जातक जातिकार कुष्ठिते मङ्गल ग्रह चतुर्थ घर, सप्तम घर, अष्टम घर वा द्वादश घरे स्थित হয় তবে এটাকে মাঙ্গলিক দোষ বলা হয়। মঙ্গল চন্দ্রের সংগে যুক্ত হয়ে প্রবল হয়। যদি শাস্ত্রানুসারে জাতক ও জাতিকা মাঙ্গলিক দোষমুক্ত হয় তবে তারা সুখে নিশ্চিন্তে বৈবাহিক জীবন যাপন করবেন। অন্যদিকে যদি তারা এই দোষমুক্ত না হয় তবে তারা অযথা বাধা ও সমস্যার সম্মুখীন হয়। সুতরাং পুরুষ ও মহিলা উভয়েরই বৈবাহিক জীবন শুরু করার পূর্বে উভয়ের কুষ্ঠিকে ভাল ভাবে বিচার করা উচিত। মাঙ্গলিক দোষ ভালভাবে মুক্ত করার পরে তারা শান্তিপূর্ণ বৈবাহিক জীবন যাপন করতে পারবেন।

আপনার জন্ম সময়ে সপ্তম স্থানে মঙ্গলের অবস্থানের ফলে আপনি একজন মাঙ্গলিক পুরুষ। আপনার মাঙ্গলিক দোষ দূর না হওয়ার কারণে আপনার পত্নী সামান্য আগ্রাসী মনোভাবাপন্ন হতে পারেন। এইজন্য মাঝেমধ্যে আপনাদের ভিতরে বিবাদ হলেও তা বিবাহিত জীবনের শান্তিকে তেমনভাবে বিদ্বিত করবে না। রক্তচাপ বা পিত্তবিকার ভোগাতে পারে আপনাকে। মঙ্গলের প্রভাবের ফলে আপনার বিলাসিতা বিবাহযোগ্য সুচিত হয়েছে, এমনকি স্থিরীকৃত বিবাহও একাধিকবার ভেঙে যেতে পারে। তবে শেষ পর্যন্ত ভালভাবেই বিবাহ সম্পন্ন হবে। বিবাহিত জীবনে সুখ শান্তি বজায় থাকবে। সপ্তম স্থানে মঙ্গলের অবস্থানের ফলে পিত্তবিকার রোগে ভুগতে হতে পারে। দশম স্থানে মঙ্গলের দৃষ্টিদানের ফলে আপনার কর্ম প্রচেষ্টার সার্থকতা সুচিত হয়েছে। সমাজে আপনার সম্মানযোগ্য অবস্থান থাকবে লগ্নের উপরে মঙ্গলের দৃষ্টি থাকার জন্য কখনও মানসিক কষ্ট ও চিন্তা বৃদ্ধি পাবে। দ্বিতীয় স্থানের উপর মঙ্গলের দৃষ্টির প্রভাবে পরিবারের মধ্যে বিবাদ দেখা দিতে পারে, যার ফলে শান্তি মাঝে মধ্যে বিদ্বিত হতে পারে। বিবাহিত জীবন আনন্দঘন করবার জন্য আপনি এমন কোনও মাঙ্গলিক নারীকে বিবাহ করুন যার সঙ্গে পারস্পরিকভাবে আপনার মাঙ্গলিক দোষ নষ্ট হয়ে যাবে। এর জন্য কন্যাটির জন্মকুন্ডলীতে মাঙ্গলিক স্থানসমূহে যথা লগ্ন, চতুর্থ, সপ্তম, অষ্টম ও দ্বাদশ ঘরগুলিতে ক্ষতিকারক গ্রহ - যেমন, শনি ও রাহুর উপস্থিতি নিশ্চিতভাবে দরকার। এমনটা হলে আপনার জীবনে সুখ স্বাচ্ছন্দ্য ও ধনদৌলত অর্জন সম্ভবপর এবং দাম্পত্য জীবনও হয়ে উঠবে মধুর।

কালসর্প যোগ

অগ্নে রাহুরথ কেতু সর্বে মধ্যগতা গৃহা।
যোগা যং কালসর্পাখ্যো শীঘ্রং তং তু বিনাশয।।

রাহু এবং কেতু গৃহের মধ্যে বাকি সমস্ত সাত গৃহ বিদ্যমান থাকলে, কালসর্প যোগ গঠিত হয়। এই কালসর্প যোগের অশুভ ফল থেকে মুক্তি পেতে এর নিবারণ করা অত্যন্ত জরুরী।

কুন্ডলীর দ্বাদশ ভাবে রাহুর উপস্থিতি অনুযায়ী প্রধানত দ্বাদশ প্রকার কালসর্প যোগ গঠিত হয়-
৪. অক্ষয়শ্রাব্ধ. কৈশিক ৩. স্বাস্থ্যক্ষয় ৭. তক্ষক ৮. ককোটক ৯. শংখচূড় ১০.
ঘাতক ১১. বিষধর ১২. শেয়নাগ।

কালসর্প যোগ উদিত এবং অনুদিত দুই প্রকারের হয়। রাহুর সামনে/মুখে সমস্ত সাত গৃহ গৃহিত থাকলে তাহা উদিত গোলার্ধ যোগ তৈরী করে এবং রাহুর পশ্চাৎ দিক থেকে যদি সাত গৃহ স্থাপিত হয় তা অনুদিত গোলার্ধ নামক যোগ তৈরী করে। যদি রাহু ও কেতুর মধ্যে স্থিত গৃহে কিছু গৃহ রাহু-কেতুর অক্ষে সামান্য বাইরে থাকে তা আংশিক কালসর্প যোগ হিসাবে পরিগণিত হয়।

এই যোগে উৎপন্ন জাতক মানসিক অশান্তি, ধনপ্রাপ্তিতে বাধা, সন্তান জন্মে অবরোধ এবং গৃহস্থ জীবনের প্রতিমুহূর্তে অশান্তির সম্মুখীন হয়। জাতক প্রায়ই দুঃস্বপ্ন দেখে। কিছু না কিছু অশুভ ঘটনার আশঙ্কা মনের মধ্যে থাকে। নিজস্ব ক্ষমতা ও কার্য কুশলতার পূর্ণ ফল প্রাপ্ত করে না অথবা দেরীতে সফলতা প্রাপ্ত করে। এই যোগে হঠাৎ লোকসান বা প্রতিষ্ঠা হানির সম্মুখীন হয়। কালসর্প যোগের বিধিবেং উপচারের দ্বারা এরূপ কষ্ট থেকে মুক্তি পাওয়া সম্ভব।

জাতক পর কালসর্প যোগের প্রভাব

আপনার জন্মকুন্ডলীতে কালসর্পযোগ না থাকায় এটির জন্য শান্তি ইত্যাদির আবশ্যিকতা নেই এবং আপনি সম্পূর্ণ সুখী জীবনযাপন করবেন।

॥ अमलुड सुशु.लुलुड नदरक लुगलुड ॥

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में ॥ ५ ॥ के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

হান্দু ৐ কব্ব

৐

যদিও মেঘ রাশি ইংগিত করে যে আপনার গুপ্তবিজ্ঞান সম্পর্কে খুবই কম উৎসাহ এবং রবির প্রভাব আপনার উপর অতি প্রবল। তাই পরবর্তী কালে আপনি গুঢ়তত্ত্ব সম্পর্কে ভীষণ মাত্রায় উৎসাহী হয়ে পড়বেন। আপনি রহস্য, আত্মিক বিষয় ইত্যাদি গবেষণায় আগ্রহ প্রকাশ করবেন। আপনি যে কোন ধরনের রহস্যের প্রতি আগ্রহী যেমন গুঢ়তত্ত্ব সম্পর্কে গল্প বা ভূতপ্রেরিত সম্পর্কে গল্প।

কোনো বড় ধরনের ডাকাতির আভাস পাওয়া যাচ্ছে না আপনার কুন্ডলী থেকে এবং আপনার পেশা এবং সম্পত্তি সুরক্ষিত থাকবে। আপনি আকস্মিক ভাবে বেশ কিছু পরিমাণ পূর্বপুরুষের সম্পত্তি লাভ করবেন ও নিজেও কিছু সম্পত্তি আহরণ করবেন। অন্যদিকে বীমার মারফত আপনি কিছু আর্থিক লাভ করতেও সক্ষম হবেন। আপনি দীর্ঘজীবী হবেন এবং কোনো বড় ধরনের অসুখ আপনার হবে না।

আপনার জন্মের সময় সূর্য অষ্টমস্থানে অবস্থান করায় আপনার পিতা স্বাস্থ্য খুব একটা ভাল যাবে না। তিনি আপনাকে স্নেহ করবেন এবং সমস্ত কাজে আপনাকে সহায়তা করবেন। তিনি আপনাকে সঠিক পথে চালনা করার জন্য সাহায্য ও সমর্থন করবেন।

আপনি আপনার পিতাকে ভক্তি করবেন এবং আপনাদের মধ্যে কদাচিৎ কোন অশান্তির সৃষ্টি হবে। আপনি যত্নসহকারে আপনার পিতার সেবা করবেন।

চন্দ্র

চন্দ্রের অবস্থান কুন্ডলের একাদশ স্থানে হওয়ায় দেখা যায় যে আপনি আপনার মার কাছ থেকে আর্থিক দিক দিয়ে লাভবান হবেন। অন্য কারোর মারফতও আর্থিক লাভের ইংগিত পাওয়া যাচ্ছে। কাপড়ের ব্যবসা, মুক্তাবিক্রী এবং সমুদ্র থেকে কোনো কিছু আহরণ করে বিক্রী থেকেও কিছু আর্থিক লাভের আভাস পাওয়া যাচ্ছে।

আপনার জীবনে বন্ধুদের সহযোগিতার বিশেষ প্রয়োজন আছে এবং বন্ধুদের সাহায্যে আপনি নিজেকে বিশেষভাবে বুঝতে পারবেন। বন্ধু অপেক্ষা আপনার বান্ধবীর সংখ্যা বেশী হবে। তারা শিক্ষিত হবে এবং আপনি ব্যবসায়ীদের সংগ বেশী পছন্দ করবেন।

যে সমাজে আপনি ঘোরাফেরা করেন সেটা শিক্ষিত ও ব্যবসায়ী ব্যক্তিদের কেন্দ্রস্থল। আপনার দিদির মনোভাব আপনার প্রতি ভালো হবে এবং আর্থিক দিক দিয়ে আপনি তার কাছ থেকে যথেষ্ট লাভবান হবেন। আপনি যেভাবে জীবন কাটাবেন তাতে আপনি খুশী, কেননা আপনার অন্তর্নিহিত সমস্ত আশাই পূরণ হবে। আপনার জন্মকুন্ডলীতে আপনার আশা পূরণের ইংগিত আছে।

আপনার জন্মের সময় চন্দ্র একাদশস্থানে অবস্থান করায় আপনার মা আপনাকে অত্যধিক স্নেহ করবেন। আপনার জীবনের অধিকাংশ উদ্যোগকে সাফল্যমন্ডিত করতে তিনি সহায়তা করবেন এবং আর্থিক দিক দিয়ে আপনাকে সাহায্য করবেন।

আপনি মাকে শ্রদ্ধা করবেন এবং আন্তরিকভাবে তাঁর সেবা করবেন। আপনারা পরস্পরকে

মানিয়ে নিয়ে চলবেন এবং একে অপরের জন্যে ভাগ্যবান বলে বিবেচিত হবেন।

মঙ্গল

মঙ্গল তুলায় সপ্তম স্থানে অবস্থানের ফলে আপনি পরিপূর্ণ বৈবাহিক জীবনযাপন থেকে বঞ্চিত হতে পারেন, কেননা আপনার জীবনসার্থীর সঙ্গে সুসম্পর্ক বজায় থাকবে না অথবা আপনি অন্য কারো সঙ্গে প্রণয়বন্ধনে আবদ্ধ হতে পারেন। ফলে আপনাদের দুজনের মধ্যে বিচ্ছেদ ঘটতে পারে।

আপনার চরিত্রের এই রোমান্টিকতার জন্য আপনি নিজেই বিপদ ডেকে আনবেন এবং অন্যরা আপনার বিরুদ্ধে নিন্দার তীর ছোঁতে শুরু করলে ব্যবসায় আপনি সফলতা লাভ করতে পারবেন। কেননা আর্থিক দিক দিয়ে আপনি একজন ভালো সংগী পেতে পারেন। কিন্তু আপনি বিচক্ষণ না হলে অর্থের অপব্যয় ঘটবে। আপনি এমন এক ব্যক্তি যে ফাটকা বাজিতে মেতে উঠতে পারেন।

এই শিশুটির জন্ম সময়ে সপ্তম ঘরে মঙ্গলের অবস্থান ইংগিত করে যে ভাই ও বোনদের স্বাস্থ্য সাধারণভাবে ভালোই থাকবে। কিন্তু মাঝে মধ্যে তারা দৈহিক দুর্বলতা অনুভব করবে। একাধিক উপায়ে তারা তাকে সাহায্য করবে।

সে তাদের ভালোবাসবে ও মান্য করবে। কিছু ঘটনা ছাড়া তাদের মধ্যে মিলমিশ থাকবে। দরকারের সময় একে অপরকে সাহায্য করবে।

বুধ

বুধের অবস্থান নবম স্থানে হওয়ায় দেখা যায় যে জীবনের শুরুতে আপনি নানা সমস্যার সম্মুখীন হবেন যদিও পরবর্তীকালে সফলতার স্বাদ পাবেন। পৃথিবী সম্পর্কে অধিকতর জানতে আপনি ভীষন আগ্রহী বিশেষ করে বিদেশের স্থান ও তার মানুষজনের বিষয়ে। আপনি সমগ্র পৃথিবীটা ঘুরে দেখতে চান। নিয়ম মারফিক কাজে আপনি খুব তাড়াতাড়ি বীতশ্রদ্ধ হয়ে পড়েন।

যে সব শিক্ষায় আপনি উৎসাহী সেগুলো আপনার স্কুল জীবনে শিক্ষা লাভের ক্ষেত্রে বিশেষ সহায়ক হবে। যে সব বিষয় আপনার কোনো কাজে লাগবে না সেই বিষয়ে আপনি মোটেই আগ্রহী নন। আপনার বয়স্ককালে আপনি আইন, দর্শন, ঔষধ পত্র এবং ধর্ম সম্বন্ধে আগ্রহী হবেন।

বুধের অবস্থান ধনুর নবম স্থানে হওয়ার ফলে দেখা যায় যে আপনার ধর্মীয় রীতি নীতির ক্ষেত্রে যথেষ্ট উৎসাহ আছে কিন্তু জীবনে ভীষন সংঘর্ষের জন্যে আপনি ধর্মীয় পূজা অর্চনার ব্যাপারে প্রতিনিয়ত সময় পান না। গুপ্তবিজ্ঞান এবং আধ্যাত্মিকতা সম্পর্কে আপনার আগ্রহ আপনাকে যথেষ্ট নাম, অর্থ ও সামাজিক মর্যাদা দেবে বুধের এই অবস্থানের জন্যে যদিও আপনার নাতি - নাতনীদের খুব অগ্রগতি লাভ করার সম্ভাবনা আছে কিন্তু বুধের উপস্থিতির জন্যে আবার আপনিই তাদের সাহায্য হতে বঞ্চিত হবেন ফলে আপনার মনে দুঃখ থাকবে।

বৃহস্পতি

বৃহস্পতির অবস্থান কর্কট রাশির চতুর্থস্থানে হওয়ার ফলে আপনি অত্যন্ত ভাগ্যবান হবেন। আপনার মা পরিশ্রমী ও দৃঢ়চেতা মহিলা হবেন এবং শিক্ষাগত যোগ্যতা অর্জেন আপনাকে বিশেষ ভাবে

সহায়তা করবেন। ফলে আপনি ভবিষ্যতে উচ্চশিক্ষা অর্জনে সক্ষম হবেন। পিতা মাতার কাছ থেকে আপনি সম্পত্তি পাবেন। ফলে আপনার আর্থিক স্বচ্ছলতা বজায় থাকবে। আপনি আপনার সন্নিহিত অর্থ ধর্মীয় ও সামাজিক কাজে ব্যয় করবেন। এর দ্বারা আপনার আধ্যাত্মিক জ্ঞানের পরিধি বাড়বে।

শুক্র

শুক্রের অবস্থান তুলার সপ্তম স্থানে হওয়ায় দেখা যায় যে আপনার বিয়ে একটা খুব ভালো - পরিবারে হবে এবং আপনার গৃহ পরিবেশ শান্তিপূর্ণ হবে। কিন্তু আপনি কিভাবে পারিবারিক সুস্থতা বজায় রাখবেন সেটা পুরোপুরি আপনার ওপরেই নির্ভর করবে কেননা দেখা যাচ্ছে যে আপনার মদ্যপানে আসক্তি বাড়বে এবং আপনার জীবন সাথীর প্রতি অবিশ্বাসী মনোভাব গড়ে তুলবেন। কিন্তু আপনার পত্নী আপনার প্রতি খুব শীতল মনোভাব গ্রহন করে চলবেন।

আপনি বিপরীত লিংগের কারোর প্রতি আকর্ষিত হতে পারেন যার সাথে আপনি ব্যবসা যৌথভাবে শুরু করবেন, যাই হউক আপনার ব্যবসা কিন্তু লাভজনক হবে।

শনি

শনি মিথুন রাশির তৃতীয় স্থানে অবস্থান হেতু আপনি আপনার নিজের কাজ সম্পর্কে অত্যন্ত সচেতন হবেন। আপনি অত্যন্ত স্নেহ প্রবন হবেন এবং আপনি আপনার অধঃস্তন বা সহকর্মীদের কাছে জনপ্রিয় হবেন।

শনি মিথুন রাশির তৃতীয় স্থানে অবস্থান করায় আপনি আপনার অবসর সময় সঙ্গীত ও নৃত্যের মধ্য দিয়ে উপভোগ করবেন। আপনার কাঁধ ও বাহুতে আঘাত পাবার সম্ভাবনা আছে।

রাহু

রাহু বৃষ রাশির দ্বিতীয় স্থানে অবস্থান হেতু আপনি সন্দেহজনক বা দ্বিধাগ্রস্থ মনের ব্যক্তি হবেন এবং প্রয়োজনের তুলনায় বেশী কথা বলবেন। রাহুর দ্বারা আপনি আর্থিক ও পারিবারিক সমস্যার সন্মুখীন হবেন। আপনার গোপনে টাকা পয়সা জমানোর অভ্যাস থাকবে। আপনার আর্থিক ক্ষতি হওয়ার সম্ভাবনা আছে। তবে আপনি নিজস্ব ক্ষমতা ও জ্ঞানের দ্বারা এই সমস্যা কাটিয়ে উঠবেন। আপনি স্বনামধন্য ব্যক্তি হবেন।

কেতু

কেতুর অবস্থান অষ্টম স্থানে হওয়ায় দেখা যায় যে আপনি গুপ্তবিজ্ঞান সম্পর্কে একেবারে অনাগ্রহী। আপনি এই ধরনের কাজকে সময়ের অপচয় বলে ভাবেন। যদিও বৃশ্চিক রাশি সম্পত্তির ক্ষেত্রে আপনার সৌভাগ্য ইংগিত দেয় কিন্তু কেতুর অবস্থান অষ্টম স্থানে হওয়ায় আপনার সম্পত্তির সৌভাগ্য নষ্ট করে দেয়। কোনো মৃত ব্যক্তির সম্পত্তি বা আপনার নিজস্ব কোনো সম্পত্তি কোনোটাই আপনার

পাওয়ার সম্ভাবনা নেই।

পণের ব্যাপারেও আপনি বিশেষ একটা ভাগ্যবান নন। এটা হচ্ছে কেতুর অষ্টম স্থানে অবস্থানের জন্যে যদিও বৃশ্চিক রাশি এর বিপরীত সম্ভাবনার ইংগিত করে। আপনার জীবনকালে মোটামুটি হবে। দুর্ঘটনা থেকে সাবধান হওয়া উচিত বিশেষ করে উচু জায়গা থেকে পড়ে যাওয়ার প্রবল সম্ভাবনা। আপনার মৃত্যু আকস্মিক ভাবে হবে।



দশা বিশ্লেষণ

মহাদশা :- শনি
(03/03/2016 - 03/03/2035)

শনির মহাদশা ১৯ বর্ষ অবধি হয়। আপনার কুন্ডলীতে এই দশা ০৩/০৩/২০১৬ আরম্ভ ও ০৩/০৩/২০৩৫ সমাপ্ত হবে।

শনি আপনার কুন্ডলীতে তৃতীয় ভাবে অবস্থিত। শনি এক অশুভ গ্রহ এবং ফল প্রাপ্তিতে বিলম্ব ও বাধা প্রদান করে। ফল প্রাপ্তির জন্য এই গ্রহ জাতককে কঠিন পরিশ্রম করায় প্রেরিত কোরে জাতকের ধৈর্য পরীক্ষা নেয়োয়ার পরে জাতককে লক্ষ্য প্রাপ্তি করায়। অতএব শনি এক 'কার্মিক' গ্রহ। তৃতীয় ভাবে স্থিত এই গ্রহের দৃষ্টি আপনার জন্মকুন্ডলীতে পঞ্চম, নবম ও দ্বাদশ ভাবের উপর আছে। এই সব ভাবের উপর প্রভাব বিস্তার করেছে। তৃতীয় ভাব মানসিক অভিরুচি, বুদ্ধি সাহস, পরাক্রম, নিকট যাত্রা, হাত, গলা, বাহু, স্নায়ুতন্ত্র ইত্যাদি দ্যোতক।

স্বাস্থ্য :

তৃতীয় ভাব সাহস ও পরাক্রম ভাব এখানে মহাদশা অধিপতি শনি এই ভাবকে শক্তি প্রদান করেছে। অতএব এই দশা চলাকালীন আপনি নিজেকে সাহসী ও শক্তিশালী অনুভব করবেন এবং আপনার কোনো কঠিন রোগ অথবা কোনো রকম স্বাস্থ্য সমস্যা হবে না।

ধন-সম্পত্তি :

শনি আপনার কুন্ডলীতে তৃতীয় ভাবে অবস্থিত। এই ভাব সাহস, বুদ্ধি এবং মানসিকতা পরিচায়ক। ফলস্বরূপ আপনার চল-অচল সম্পত্তি বৃদ্ধি করার অনেক সুযোগ পাবেন। আপনার পূর্ব ঋণ শোধ হবে। আপনি আরাম ও বিলাস ইত্যাদির বস্তু ক্রয়ে অর্থ ব্যয় করবেন।

জীবিকা :

সাহসী হওয়ার কারণে আপনি নির্মম হতে পারেন। আপনি স্থানীয় বোর্ড, মিউনিসিপ্যালিটি ইত্যাদির প্রধান বা অধ্যক্ষ হতে পারেন। আপনার সফলতা প্রাপ্তিতে অসুবিধা হবে ও লক্ষ্য প্রাপ্তিতে বাধা পাবেন।

পারিবারিক জীবন :

আপনার পারিবারিক জীবন উত্তম ও সম্ভাব পূর্ণ হবে। আপনার জীবনসাথী আপনাকে সহযোগীতা করবে। কিন্তু, আপনার ভাই-বোন সমস্যা ও অসুবিধার সৃষ্টি করবে এবং আপনি সাহসিকতার সঙ্গে তার মোকাবিলা করবেন।

শিক্ষা/প্রশিক্ষণ :

উচ্চ শিক্ষা এবং সাহিত্যিক বৃত্তি বিকাশের জন্য এই দশা অত্যন্ত অনুকূল।

অন্তর্দর্শা :- শনি - শুক্র
(23/12/2022 - 22/02/2026)

শনি মহাদশা কী অবধি ১৯ বর্ষ হোতী হৈ। আপকে লিএ যহ ০৩/০৩/২০১৬ কো প্রারংভ হোকর ০৩/০৩/২০৩৫ কো সমাপ্ত হোগী। ইস মহাদশা মেং শুক্র কী অংতর্দর্শা ৩ বর্ষ ২ মাস কী হোগী জো আপকে লিএ ২৩/১২/২০২২ কো প্রারংভ হোকর ২২/০২/২০২৬ কো সমাপ্ত হোগী।

শুক্র আপনার জন্মপত্রিকায় সপ্তম ভাবে অবস্থিত। সপ্তম ভাব আত্মীয় সম্বন্ধ, জীবনসার্থী, ব্যবসায়ের অংশীদার, মোকদ্দমা, বিদেশে প্রভাব ও জীবনে বিপদের পরিচায়ক। শুক্র শুভ গৃহ। সপ্তম ভাবে স্থিত শুক্র আপনার কুন্ডলীর লগ্নে দৃষ্টিপাত দ্বারা কারকত্বকে প্রভাবিত করছে।

এই দশায় আপনার ব্যক্তিত্বের বিকাশ ও শিষ্ট ব্যবহার সম্পন্ন হবেন। আমোদ-প্রমোদে মন লাগবে। জনপ্রিয় হবেন বিশেষকরে বিপরীত লিঙ্গের ব্যক্তির আপনার প্রতি আকর্ষিত হবে। তাদের সাথে আবশ্যিকতার অধিক প্রগাঢ়তা বৃদ্ধি কোনো ব্যাধির সৃষ্টি করতে পারে। বিপরীত লিঙ্গের ব্যক্তিদের সাথে ব্যবসায়ে অংশীদারী লাভজনক হবে।

শুভত্ব বৃদ্ধি ও অরিষ্ট দূরীকরণে নিম্ন উপায় করুন :

- ১ দেবী লক্ষ্মীর উপাসনা করুন।
- ২ পীপিলিকাদের চিনি ও আটা খাওয়ান।
- ৩ বালিকাদের পায়োস খাওয়ান।

অন্তর্দর্শা :- শনি - রবি
(22/02/2026 - 04/02/2027)

শনি মহাদশা ১৯ বছর। আপনার এই মহাদশা ০৩/০৩/২০১৬ আরম্ভ হয়ে ০৩/০৩/২০৩৫ সমাপ্ত হবে।

শনির মহাদশায় সূর্যের অন্তর্দর্শা ১১ মাস ১২ দিন পর্যন্ত হয়। আপনার এই অন্তর্দর্শা ২২/০২/২০২৬ আরম্ভ হয়ে ০৪/০২/২০২৭ সমাপ্ত হবে।

সূর্য আপনার জন্মপত্রিকায় অষ্টম ভাবে স্থিত। অষ্টম ভাব আয়ু, উত্তরাধিকার, দুর্ঘটনা, দুর্ভাগ্য, দুঃখ, চিন্তা, নিরাশা, ক্ষতি, বাধা, চুরি ও ডাকাতির পরিচায়ক। সূর্য শক্তিশালী গৃহ। অষ্টম ভাবে স্থিত সূর্য আপনার কুন্ডলীর দ্বিতীয় ভাবে দৃষ্টিপাত দ্বারা কারকত্বকে প্রভাবিত করছে।

এই দশায় আপনার ব্যক্তিত্ব আকর্ষক ও বাণীতে মধুরতা বৃদ্ধি পাবে। কখনও সখনও সম্মান নষ্ট হতে পারে। ফাটকায় ইত্যাদিতে অকস্মাৎ ধনলাভ হতে পারে। এই অন্তর্দর্শায় কখনও ভালো কখনও মন্দ ঘটনায় ঘটিত হতে পারে।

অরিষ্ট দূরীকরণে নিম্ন উপায় করুন।

- ১ মধু ও দূধ পান করুন এবং অগ্নিতে দূধ অর্পণ করুন।
- ২ গরীবদের আটা, গুড় ও তামা দান করুন।

অন্তর্দর্শা :- শনি - চন্দ্র
(04/02/2027 - 04/09/2028)

শনি মহাদশায় চন্দ্রের অন্তর্দর্শা ১ বর্ষ ৭ মাস। আপনার এই মহাদশা ০৩/০৩/২০১৬ আরম্ভ হয়ে ০৩/০৩/২০৩৫ সমাপ্ত হবে।

চন্দ্র আপনার জন্মপত্রিকায় একাদশ ভাবে অবস্থিত। একাদশ ভাব বন্ধুবর্গ, সমাজ, উচ্চাকাঙ্ক্ষা, ইচ্ছাপূর্তি, উদ্যমের সফলতা, ধনলাভ, বড় ভাই, ভাগ্যোদয় ও হাঁটুর পরিচায়ক। চন্দ্র মন ও মাতার কারক গ্রহ। একাদশ ভাব স্থিত চন্দ্র আপনার কুন্ডলীর পঞ্চম ভাবে দৃষ্টিপাত দ্বারা কারকত্বকে প্রভাবিত করছে

এই দশায় আপনি বাধা সত্ত্বেও প্রত্যেক কার্যে সফল হবেন। দান-ধর্মে যুক্ত থাকায় সমাজে সন্মান লাভ করবেন। আপনার জনপ্রিয়তা বৃদ্ধি, উত্তম ধনাগম এবং বিদ্বান ব্যক্তিদের সঙ্গে সম্পর্ক স্থাপিত হবে।

অরিষ্ট দূরীকরণে চন্দ্র বৈদিক মন্ত্র ১১০০০ বার জপ করুন।

চন্দ্রদেয়ের সময় চন্দ্র মন্ত্র পাঠ করতে করতে চন্দ্রের উদ্দেশ্যে দুধ অর্পণ করুন।

অন্তর্দর্শা :- শনি - মঙ্গল
(04/09/2028 - 14/10/2029)

শনি মহাদশা ১৯ বছর। এই মহাদশা ০৩/০৩/২০১৬ আরম্ভ হয়ে ০৩/০৩/২০৩৫ সমাপ্ত হবে। এই মহাদশায় মঙ্গলের অন্তর্দর্শা ১ বছর ১ মাস। আপনার এই অন্তর্দর্শা ০৪/০৯/২০২৮ আরম্ভ হয়ে ১৪/১০/২০২৯ সমাপ্ত হবে।

মঙ্গল আপনার জন্মপত্রিকায় সপ্তম ভাবে অবস্থিত। সপ্তম ভাব আত্মীয় সম্বন্ধ, জীবনসংগী, ব্যবসায়ের অংশীদার, মোকদ্দমা, বিদেশে প্রভাব ও জীবনে বিপদের পরিচায়ক।

সপ্তম ভাব স্থিত মঙ্গল আপনার কুন্ডলীর ১০, ১, ২ ভাবে দৃষ্টিপাত দ্বারা কারকত্বকে প্রভাবিত করছে।

এই দশায় আপনি বিপরীত লিঙ্গের প্রতি আকৃষ্ট হবেন। আপনি কটু ও ক্রোধিত ব্যবহার করতে পারেন। ঈর্ষ্যা বৃদ্ধি হতে পারে। বিবাহিত জীবনে উৎকণ্ঠিত হতে পারেন। আপনি মাসুলিক। অতএব আপনার জীবনসংগী মাসুলিক হওয়া প্রয়োজন।

অরিষ্ট দূরীকরণে ও শুভত্ব বৃদ্ধির জন্য প্রতিদিন হনুমান চালাসা পাঠ করুন ও হনুমানজীর দর্শন করুন।

অন্তর্দর্শা :- শনি - রাহু
(14/10/2029 - 20/08/2032)

শনি মহাদশা ১৯ বছর। আপনার এই মহাদশা ০৩/০৩/২০১৬ আরম্ভ হয়ে ০৩/০৩/২০৩৫ সমাপ্ত হবে। এই মহাদশায় রাহুর অন্তর্দর্শা ২ বছর ১০ মাস। আপনার এই অন্তর্দর্শা ১৪/১০/২০২৯ আর

মন্ড হয়ে ২০/০৮/২০৩২ সমাপ্ত হবে।

রাহু আপনার জন্মপত্রিকায় দ্বিতীয় ভাবে অবস্থিত। দ্বিতীয় ভাব ভাগ্য, লাভ-হানি, সাংসারিক অভিজ্ঞতা, রত্ন, বাণী, ডান চোখ, উচ্চাকাঙ্ক্ষা, জিভ, দাঁত ও পরিবারের সদস্যদের পরিচায়ক। রাহু ছায়া গৃহ। রাহুর কোনো স্বরাশি বা রাশ্যাধিপত্য নেই। মান্যতা অনুযায়ী রাহু অশুভ, কিন্তু এর অবস্থিতি অনুসারে শুভঅশুভ ফল প্রদান করে। দ্বিতীয় ভাব স্থিত রাহু আপনার কুন্ডলীর অষ্টম ভাবে দৃষ্টিপাত দ্বারা কারকত্বকে প্রভাবিত করছে।

এই দশায় কটুবাক্য প্রয়োগের কারণে আপনার পারিবারিক জীবন অশান্তিপূর্ণ এবং পরিবার থেকে দূরত্ব বাড়তে পারে। আর্থিক সক্ষমতা থাকা সত্ত্বেও আপনি কৃপণ হতে পারেন। জ্বর পীড়িত হওয়ায় শরীর খারাপ লাগতে পারে। চোখের রোগের ব্যাপারে সাবধান হন। আর্থিক বিষয়ে অনিশ্চিততা থাকবে। মিত্র ও ব্যবসায়ের মাধ্যমে ধনাগম হতে পারে।

অরিষ্ট দূরীকরণে ও শুভত্ব বৃদ্ধির জন্য রাহুর বৈদিক মন্ত্র ১৮০০০ বার জপ করুন।

